ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(1): 974-976
www.allresearchjournal.com
Received: 19-11-2016
Accepted: 22-12-2016

डॉ. प्रतिमा कुमारी
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

Corresponding Author:
डॉ. प्रतिमा कुमारी
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

आचार्य विनोबा भावे की दृष्टि में सर्वोदय की अवधारणा

डॉ. प्रतिमा कुमारी

सारांशः
आचार्य विनोबा भावे ने सर्वोदय समाज की स्थापना की। यह रचनात्मक कार्यकर्ताओं का अखिल भारतीय संघ था। इसका उद्देश्य अहिंसात्मक तरीके से देश में सामाजिक परिवर्तन लाना था। इस कार्यक्रम में वे पदयात्री की तरह गाँव–गाँव घूमे और इन्होंने लोगों से भूमिखण्ड दान करने की याचना की, ताकि उसे कुछ भूमिहीनों को देकर उनका जीवन सुधारा जा सके। उनका यह आह्वान जितना प्रभावी रहा, वह विस्मित करता है। वे गांधीवादी विचारों पर चले। रचनात्मक कार्यों और ट्रस्टीशिप जैसे विचारों का प्रयोग किया।

प्रस्तावनाः
आचार्य विनोबा भावे हमारे लिये एक प्रकाश स्तंभ है, वे राष्ट्रीयता, नैतिकता एवं अहिंसक जीवन एवं पीड़ितों एवं अभावों में जी रहे लोगों के लिये आशा एवं उम्मीद की एक मीनार थे, रोशनी उनके साथ चलती थी। वे संतों की उत्कृष्ट पराकाष्ठा थे, भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता, विशिष्ट उपदेष्टा, महान् विचारक तथा प्रसिद्ध गांधीवादी नेता थे। उनका मूल नाम विनायक नरहरी भावे था। वे भारत में भूदान तथा सर्वोदय आन्दोलन प्रणेता के रूप में सुपरिचित थे। वे भगवद्गीता से प्रेरित जनसरोकार वाले जननेता थे, प्रवचनकार थे, महामनीषी थे, जिनका हर संवाद सन्देश बन गया है। वे कर्मप्रधान व्यक्ति थे इसलिए गीता उनका आदर्श थी। उन्होंने अपने प्रवचनों में गीता का सार बेहद सरल शब्दों में जन–जन तक पहुँचाया ताकि उनका आध्यात्मिक उदय हो सके, अंधेरों में उजाले एवं सत्य की स्थापना हो सके।
सर्वोदय, अंग्रेज लेखक रस्किन की एक पुस्तक 'अनटू दिस लास्ट' का गांधीजी द्वारा गुजराती में अनूदित एक पुस्तक है। 'अन्टू द लास्ट' का अर्थ है– इस अंतवाले को भी। सर्वोदय का अर्थ है– सबका उदय, सबका विकास।
सर्वोदय भारत का पुराना आदर्श है। हमारे ऋषियों ने गाया है– 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः।' [1] सर्वोदय शब्द भी नया नहीं है। जैनमुनि समंतभद्र कहते हैं– 'सर्वापदामंतकरं निरतं सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव।' [2] 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' [3], 'वसुधैव कुटुम्बकम् [13], अथवा 'अहं ब्रह्मास्मि' [5] और 'तत्त्वमसि' [6] के हमारे पुरातन आदर्शों में 'सर्वोदय' के सिद्धांत अंतर्निहित हैं।
सर्वोदय समाज गांधी के कल्पनाओ का समाज था, जिसके केन्द्र मे भारतीय ग्राम व्यवस्था थी। विनोबा जी ने कहा है– 'सर्वोदय का अर्थ है– सर्वसेवा के माध्यम से समस्त प्राणियो की उन्नति।' [7] सर्वोदय के व्यवहारिक स्वरूप को हम बहुत हद तक विनोबाजी के भूदान आन्दोलन मे देख सकते हैं।
सुबहवाले को जितना, शामवाले को भी उतना ही– प्रथम व्यक्ति को जितना, अंतिम व्यक्ति को भी उतना ही, इसमें समानता और अद्वैत का वह तत्त्व समाया है, जिस पर सर्वोदय का विशाल प्रासाद खड़ा है। [8]

सर्वोदय का उद्देश्य–
आचार्य विनोबा भावे जी की दृष्टि में सर्वोदय के निम्नलिखित उद्देश्य हैं [9]

1. आत्म–संयम
2. शोषणहीन समाज
3. सर्वांगीण विकास
4. लोकनीति के आधार पर शासन
5. सत्ता का विकेन्द्रीकरण

सर्वोदय दर्शन–

'सर्वोदय' का आदर्श है अद्वैत और उसकी नीति है समन्वय। मानवकृत विषमता का वह अंत करना चाहता है और प्राकृतिक विषमता को घटाना चाहता है। जीवमात्र के लिए समादर और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सहानुभूति ही सर्वोदय का मार्ग है। जीवमात्र के लिए सहानुभति का यह अपूत जब जीवन में प्रवाहित होता है, तब सर्वोदय की लता में सुरभिपूर्ण सुमन खिलते हैं। सर्वोदय कहता है– 'तुम दूसरों को जिलाने के लिए जीओ।' दूसरों को अपना बनाने के लिए प्रेम का विस्तार करना होगा, अहिंसा का विकास करना होगा और शोषण को समाप्त कर आज के सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन करना होगा।' [10]

सर्वोदय ऐसे वर्गविहीन, जातिविहीन और शोषणमुक्त समाज की स्थापना करना चाहता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वांगीण विकास का साधन और अवसर मिले। विनोबा ने कहा है कि– 'जब हम सर्वोदय का विचार करते हैं, तब ऊँच–नीच भावशाली वर्णव्यवस्था दीवार की तरह समाने खड़ी हो जाती है। उसे तोड़े बिना सर्वोदय स्थापित नहीं होगा। सर्वोदय को सफल बनाने के लिए जातिभेद मिटाना होगा और आर्थिक विषमता दूर करनी होगी। इनको मिटाने से ही सर्वोदय समाज बनेगा।' [11]

सर्वोदय ऐसी समाजरचना चाहता है जिमें वर्ण, वर्ग, धर्म, जाति, भाषा आदि के आधार पर किसी समुदाय का न तो संहार हो, और न ही बहिष्कार। सर्वोदय की समाजरचना ऐसी होनी चाहिए, जो सर्व के निर्माण और सर्व की शक्ति से सर्व के हित में चले, जिसमें कम या अधिक शारीरिक सामर्थ्य के लोगों को समाज का संरक्षण समान रूप से प्राप्त हो और सभी तुल्य पारिश्रमिक (इक्वीटेबल वेजेज) के हकदार माने जाएँ।

विज्ञान और लोकतंत्र के इस युग में सर्व की क्रांति का ही मूल्य है और वही सारे विकास का मापदंड है। सर्व की क्रांति में पूँजी और बुद्धि में परस्पर संघर्ष की गुंजाइश नहीं है। वे समान स्तर पर परस्पर पूरक शक्तियाँ हैं। स्वभावतः सर्वोदय की समाजरचना में अंतिम व्यक्ति समाज की चिंता का सबसे पहले अधिकारी है।

सर्वोदय समाज की रचना व्यक्तिगत जीवन की शुद्धि पर ही हो सकती है। जो व्रत नियम व्यक्तिगत जीवन में मुक्ति के साधन हैं वे ही जब सामाजिक जीवन में भी व्यवहृत होंगें, तब सर्वोदय समाज बनेगा। विनोबा कहते हैं– 'सर्वोदय की दृष्टि से जो समाज रचना होगी, उसका आरंभ अपने जीवन से करना होगा। निजी जीवन में असत्य, हिंसा, परिग्रह आदि हुआ तो सर्वोदय नहीं होगा, क्योंकि सर्वोदय समाज की विषमता को अहिंसा से ही मिटाना चाहता है। साम्यवादी का ध्येय भी विषमता मिटाना है, परंतु इस अच्छे साध्य के लिए वह चाहे जैसा साधन इस्तेमाल कर सकता है, परंतु सर्वोदय के लिए साधनशुद्धि भी आवश्यक है।' [12]

गांधी जी भी कहते है– 'समाजवाद का प्रारंभ पहले समाजवादी से होता है। अगर एक भी ऐसा समाजवादी हो, तो उसपर शून्य बढ़ाए जा सकते हैं। हर शून्य से उसकी कीमत दसगुना बढ़ जाएगी, लेकिन अगर पहला अंक शून्य हो, तो उसके आगे कितने ही शून्य बढ़ाए जाएँ, उसकी कीमत फिर भी शून्य ही रहेगी।' [13] इसीलिए गांधी जी सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, शरीरश्रम, निर्भयता, सर्वधर्मसमन्वय, अस्पृश्यता और स्वदेशी आदि व्रतों के पालन पर इतना जोर देते थे।

सर्वोदय दर्शन के प्रमुख तत्त्व–

आचार्य विनोबा भावे की दृष्टि में सर्वोदय दर्शन के प्रमुख तत्त्व निम्नलिखित हैं–

1. पारिश्रमिक की समानता– जितना वेतन नाई को उतना ही वेतन वकील को। 'अनटू दिस लास्ट' का यह तत्त्व सर्वोदय में पूर्णतः गृहीत है। साम्यवाद भी पारिश्रमिक में समानता चाहता है। यह तत्त्व दोनों में समान है।
2. प्रतियोगिता का अभाव– प्रतियोगिता संघर्ष को जन्म देती है। साम्यवादी के लिए संघर्ष तो परम तत्त्व ही है। परंतु सर्वोदय संघर्ष को नहीं, सहकार को मानता है। संघर्ष में हिंसा है। सर्वोदय का सारा भवन ही अहिंसा की नींव पर खड़ा है।
3. साधनशुद्धि– साम्यवाद साध्य की प्राप्ति के लिए साधनशुद्धि को आवश्यक नहीं मानता। सर्वोदय में साधनशुद्धि प्रमुख है। साध्य भी शुद्ध और साधन भी शुद्ध।
4. आनुवंशिक संस्कारों से लाभ उठाने के लिए ट्रस्टीशिप की योजना– विनोबा कहते हैं कि– 'संपत्ति की विषमता कृत्रिम व्यवस्था के कारण पैदा हुई है, ऐसा मानकर उसे छोड़ भी दें, तो मनुष्य की शारीरिक और बौद्धिक शक्ति की विषमता पूरी तरह दूर नहीं हो सकती। शिक्षण और नियमन से यह विषमता कुछ अंश तक कम की जा सकती। किंतु आदर्श की स्थिति में इस विषमता के सर्वथा अभाव की कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए शरीर, बुद्धि और संपत्ति इन तीनों में से जो जिसे प्राप्त हो, उसे यही समझना चाहिए कि वह सबके हित के लिए ही मिली है। यही ट्रस्टशिप का भाव है। अपनी शक्ति और संपत्ति का ट्रस्टी के नाते ही मनुष्यमात्र के हित के लिए प्रयोग करना चाहिए। ट्रस्टीशिप में अपरिग्रह की भावना निहित है। साम्यवाद में आनुवंशिकता के लिए कोई स्थान नहीं है। उसकी नीति तो अभिजात्य के संहार की रही है।'[14]
5. विकेंद्रीकरण– सर्वोदय सत्ता और संपत्ति का विकेंद्रीकरण चाहता है जिससे शोषण और दमन से बचा जा सके। केंद्रीकृत औद्योगीकरण के इस युग में तो यह और भी आवश्यक हो गया है। विकेंद्रीकरण की यही प्रक्रिया जब सत्ता के विषय में लागू की जाती है, तब इसकी निष्पत्ति होती है शासनमुक्त समाज में। साम्यवादी की कल्पना में भी राजसत्ता तेज गर्मी में रखे हु घी की तरह अंत में पिघल जानेवाली है। परंतु उसके पहले उसे जमे हुए घी की तरह ही नहीं, बल्कि ट्रस्की के सिर पर मारे हुए हथौड़े की तरह, ठोस और मजबूत होना चाहिए। (ग्रामस्वराज्य)। परंतु गांधीजी ने आदि, मध्य और अंत तीनों स्थितियों में विकेंद्रीकरण और शासनमुक्तता की बात कही है। यही सर्वोदय का मार्ग है।[15]

निष्कर्ष–

इस समय संसार में उत्पादन के साधनों के स्वामित्व की दो पद्धतियाँ प्रचलित हैं– निजी स्वामित्व (प्राइवेट ओनरशिप) और सरकार स्वामित्व (स्टेट ओनरशिप)। निजी स्वामित्व पूँजीवाद है, सरकार स्वामित्व साम्यवाद। पूँजीवाद में शोषण है, साम्यवाद में दमन। भारत की परंपरा, उसकी प्रतिभा और उसकी परिस्थिति, तीनों की माँग है कि वह राजनीतिक और आर्थिक संगठन की कोई तीसरी ही पद्धति विकसित करे, जिससे पूँजीवाद के 'निजी अभिक्रम' और साम्यवाद के 'सामूहिक हित' का लाभ तो मिल जाए, किंतु उनके दोषों से बचा जा सके। गांधी जी की 'ट्रस्टीशिप' और 'ग्रामस्वराज्य' की कल्पना और विनोबा की इस कल्पना पर आधारित 'ग्रामदान–ग्राम स्वराज्य' की विस्तृत योजना में, दोनों के दोषों का परिहार और गुणों का उपयोग किया गया है। यहाँ स्वामित्व न निजी है, न सरकार का, बल्कि गाँव का है, जो स्वायत्त है। इस तरह सर्वोदय की यह क्रांति एक नई व्यवस्था संसार के सामने प्रस्तुत कर रही है।

सन्दर्भ–

1. सूक्तिसंग्रह, पृ.–4
2. रत्नकरण्ड श्रावकाचार, पृ.–15
3. छान्दोग्य उपनिषद्–3–14–1
4. पंचतन्त्र–3
5. बृहदारण्यक उपनिषद्–1–4–10

6. छान्दोग्य उपनिषद्–6–8–7
7. सर्वोदय दर्शन, पृ.–17
8. सर्वोदय दर्शन, पृ.–23
9. सर्वोदय दर्शन, पृ.–35
10. सर्वोदय दर्शन, पृ.–47
11. सर्वोदय दर्शन, पृ.–12
12. सर्वोदय दर्शन, पृ.–32
13. सर्वोदय दर्शन, पृ.–18
14. सर्वोदय दर्शन, पृ.–52
15. सर्वोदय दर्शन, पृ.–9